

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

कल्याण

मूल्य ₹ २२०



वर्ष
९९

श्रीशिवमहापुराणाङ्क

[हिन्दी भाषानुवाद—पूर्वार्ध, श्लोकाङ्कसहित]

गीताप्रेस, गोरखपुर

संख्या
१

श्रीहरि:

‘श्रीशिवमहापुराणाङ्क’ की विषय-सूची

स्तुति-प्रार्थना

१. भगवान् उमामहेश्वरका मंगलमय वैवाहिक वेष	११	४- श्रीशिवमहापुराणसूक्तिसुधा	२७
२. अष्टमूर्तिस्तव	२५	५- श्रीशिवमहापुराण [पूर्वार्ध]—एक सिंहावलोकन	
३. द्वादशज्योतिर्लिंगस्मरणमाहात्म्य	२६	(राधेश्याम खेमका)	३१

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
--------	------	--------------	--------	------	--------------

माहात्म्य

१. शौनकजीके साधनविषयक प्रश्न करनेपर सूतजीका उन्हें शिवमहापुराणकी महिमा सुनाना	६१	जा चंचुलाका पार्वतीजीकी सखी होना	६८
२. शिवपुराणके श्रवणसे देवराजको शिवलोककी प्राप्ति.	६३	५. चंचुलाके प्रयत्नसे पार्वतीजीकी आज्ञा पाकर तुम्बुरुका विन्ध्यपर्वतपर शिवपुराणकी कथा सुनाकर बिन्दुगका पिशाचयोनिसे उद्धार करना तथा उन दोनों दम्पतीका शिवधाममें सुखी होना	७०
३. चंचुलाका पापसे भय एवं संसारसे वैराग्य	६५	६. शिवपुराणके श्रवणकी विधि	७३
४. चंचुलाकी प्रार्थनासे ब्राह्मणका उसे पूरा शिवपुराण सुनाना और समयानुसार शरीर छोड़कर शिवलोकमें		७. श्रोताओंके पालन करनेयोग्य नियमोंका वर्णन ...	७६

प्रथम विद्येश्वरसंहिता

१. प्रयागमें सूतजीसे मुनियोंका शीघ्र पापनाश करनेवाले साधनके विषयमें प्रश्न	७९	भगवान् शिवकी स्तुति तथा उनका अन्तर्धान होना .	९५
२. शिवपुराणका माहात्म्य एवं परिचय	८१	११. शिवलिंगकी स्थापना, उसके लक्षण और पूजनकी विधिका वर्णन तथा शिवपदकी प्राप्ति करानेवाले सत्कर्मोंका विवेचन	९७
३. साध्य-साधन आदिका विचार	८४	१२. मोक्षदायक पुण्यक्षेत्रोंका वर्णन, कालविशेषमें विभिन्न नदियोंके जलमें स्नानके उत्तम फलका निर्देश तथा तीर्थोंमें पापसे बचे रहनेकी चेतावनी	१०१
४. श्रवण, कीर्तन और मनन—इन तीन साधनोंकी श्रेष्ठताका प्रतिपादन	८५	१३. सदाचार, शौचाचार, स्नान, भस्मधारण, सन्ध्या-वन्दन, प्रणव-जप, गायत्री-जप, दान, न्यायतः धनोपार्जन तथा अग्निहोत्र आदिकी विधि एवं उनकी महिमाका वर्णन	१०३
५. भगवान् शिवके लिंग एवं साकार विग्रहकी पूजाके रहस्य तथा महत्त्वका वर्णन	८७	१४. अग्नियज्ञ, देवयज्ञ और ब्रह्मयज्ञ आदिका वर्णन, भगवान् शिवके द्वारा सातों वारोंका निर्माण तथा उनमें देवाराधनसे विभिन्न प्रकारके फलोंकी प्राप्तिका कथन .	१०७
६. ब्रह्मा और विष्णुके भयंकर युद्धको देखकर देवताओंका कैलास-शिखरपर गमन	८८	१५. देश, काल, पात्र और दान आदिका विचार ...	११०
७. भगवान् शंकरका ब्रह्मा और विष्णुके युद्धमें अग्निस्तम्भरूपमें प्राकट्य, स्तम्भके आदि और अन्तकी जानकारीके लिये दोनोंका प्रस्थान	९०	१६. मृत्तिका आदिसे निर्मित देवप्रतिमाओंके पूजनकी विधि, उनके लिये नैवेद्यका विचार, पूजनके विभिन्न उपचारोंका फल, विशेष मास, वार, तिथि एवं नक्षत्रोंके योगमें पूजनका विशेष फल तथा लिंगके वैज्ञानिक स्वरूपका विवेचन	११३
८. भगवान् शंकरद्वारा ब्रह्मा और केतकी पुष्पको शाप देना और पुनः अनुग्रह प्रदान करना	९१		
९. महेश्वरका ब्रह्मा और विष्णुको अपने निष्कल और सकल स्वरूपका परिचय देते हुए लिंग-पूजनका महत्त्व बताना	९३		
१०. सृष्टि, स्थिति आदि पाँच कृत्योंका प्रतिपादन, प्रणव एवं पंचाक्षर-मन्त्रकी महत्ता, ब्रह्मा-विष्णुद्वारा			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१७.	षड्लिंगस्वरूप प्रणवका माहात्म्य, उसके सूक्ष्म रूप (ॐकार) और स्थूल रूप (पंचाक्षर मन्त्र)-का विवेचन, उसके जपकी विधि एवं महिमा, कार्यब्रह्मके लोकोंसे लेकर कारणरुद्रके लोकों-तकका विवेचन करके कालातीत, पंचावरणविशिष्ट शिवलोकके अनिर्वचनीय वैभवका निरूपण तथा शिवभक्तोंके सत्कारकी महत्ता	११९
१८.	बन्धन और मोक्षका विवेचन, शिवपूजाका उपदेश, लिंग आदिमें शिवपूजनका विधान, भस्मके स्वरूपका निरूपण और महत्त्व, शिवके भस्मधारणका रहस्य, शिव एवं गुरु शब्दकी व्युत्पत्ति तथा विघ्नशान्तिके उपाय और	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	शिवधर्मका निरूपण	१२६
१९.	पार्थिव शिवलिंगके पूजनका माहात्म्य	१३३
२०.	पार्थिव शिवलिंगके निर्माणकी रीति तथा वेद-मन्त्रोंद्वारा उसके पूजनकी विस्तृत एवं संक्षिप्त विधिका वर्णन	१३५
२१.	कामनाभेदसे पार्थिवलिंगके पूजनका विधान	१३९
२२.	शिव-नैवेद्य-भक्षणका निर्णय एवं बिल्वपत्रका माहात्म्य	१४२
२३.	भस्म, रुद्राक्ष और शिवनामके माहात्म्यका वर्णन	१४४
२४.	भस्म-माहात्म्यका निरूपण	१४६
२५.	रुद्राक्षधारणकी महिमा तथा उसके विविध भेदोंका वर्णन	१५१

द्वितीय रुद्रसंहिता

१-सृष्टिखण्ड

१.	ऋषियोंके प्रश्नके उत्तरमें श्रीसूतजीद्वारा नारद-ब्रह्म-संवादकी अवतारणा	१५७
२.	नारद मुनिकी तपस्या, इन्द्रद्वारा तपस्यामें विघ्न उपस्थित करना, नारदका कामपर विजय पाना और अहंकारसे युक्त होकर ब्रह्मा, विष्णु और रुद्रसे अपने तपका कथन	१५९
३.	मायानिर्मित नगरमें शीलनिधिकी कन्यापर मोहित हुए नारदजीका भगवान् विष्णुसे उनका रूप माँगना, भगवान्का अपने रूपके साथ वानरका-सा मुँह देना, कन्याका भगवान्को वरण करना और कुपित हुए नारदका शिवगणोंको शाप देना	१६२
४.	नारदजीका भगवान् विष्णुको क्रोधपूर्वक फटकारना और शाप देना, फिर मायाके दूर हो जानेपर पश्चात्ताप-पूर्वक भगवान्के चरणोंमें गिरना और शुद्धिका उपाय पूछना तथा भगवान् विष्णुका उन्हें समझा-बुझाकर शिवका माहात्म्य जाननेके लिये ब्रह्माजीके पास जानेका आदेश और शिवके भजनका उपदेश देना	१६५
५.	नारदजीका शिवतीर्थोंमें भ्रमण, शिवगणोंको शापोद्धारकी बात बताना तथा ब्रह्मलोकमें जाकर ब्रह्माजीसे शिवतत्त्वके विषयमें प्रश्न करना	१६९
६.	महाप्रलयकालमें केवल सद्ब्रह्मकी सत्ताका प्रतिपादन, उस निर्गुण-निराकार ब्रह्मसे ईश्वरमूर्ति (सदाशिव)-का प्राकट्य, सदाशिवद्वारा स्वरूपभूत शक्ति (अम्बिका)-का प्रकटीकरण, उन दोनोंके द्वारा उत्तम क्षेत्र (काशी या आनन्दवन)-का	

प्रादुर्भाव, शिवके वामांगसे परम पुरुष (विष्णु)- का आविर्भाव तथा उनके सकाशसे प्राकृत तत्त्वोंकी क्रमशः उत्पत्तिकी वर्णन.....	१७१
७. भगवान् विष्णुकी नाभिसे कमलका प्रादुर्भाव, शिवेच्छासे ब्रह्माजीका उससे प्रकट होना, कमलनालके उद्गमका पता लगानेमें असमर्थ ब्रह्माका तप करना, श्रीहरिका उन्हें दर्शन देना, विवादग्रस्त ब्रह्मा-विष्णुके बीचमें अग्निस्ताम्भका प्रकट होना तथा उसके ओर-छोरका पता न पाकर उन दोनोंका उसे प्रणाम करना.....	१७४
८. ब्रह्मा और विष्णुको भगवान् शिवके शब्दमय शरीरका दर्शन	१७७
९. उमासहित भगवान् शिवका प्राकट्य, उनके द्वारा अपने स्वरूपका विवेचन तथा ब्रह्मा आदि तीनों देवताओंकी एकताका प्रतिपादन	१८०
१०. श्रीहरिको सृष्टिकी रक्षाका भार एवं भोग-मोक्ष- दानका अधिकार देकर भगवान् शिवका अन्तर्धान होना.....	१८३
११. शिवपूजनकी विधि तथा उसका फल.....	१८५
१२. भगवान् शिवकी श्रेष्ठता तथा उनके पूजनकी अनिवार्य आवश्यकताका प्रतिपादन.....	१८८
१३. शिवपूजनकी सर्वोत्तम विधिका वर्णन.....	१९२
१४. विभिन्न पुष्पों, अन्नों तथा जलादिकी धाराओंसे शिवजीकी पूजाका माहात्म्य	१९६
१५. सृष्टिका वर्णन	२००
१६. ब्रह्माजीकी सन्तानोंका वर्णन तथा सती और शिवकी महत्ताका प्रतिपादन	२०३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१७.	यज्ञदत्तके पुत्र गुणनिधिका चरित्र	२०५
१८.	शिवमन्दिरमें दीपदानके प्रभावसे पापमुक्त होकर गुणनिधिका दूसरे जन्ममें कलिंगदेशका राजा बनना और फिर शिवभक्तिके कारण कुबेर पदकी प्राप्ति...	२०८
१९.	कुबेरका काशीपुरीमें आकर तप करना, तपस्यासे प्रसन्न उमासहित भगवान् विश्वनाथका प्रकट हो उसे दर्शन देना और अनेक वर प्रदान करना, कुबेरद्वारा शिवमैत्री प्राप्त करना	२११
२०.	भगवान् शिवका कैलास पर्वतपर गमन तथा सृष्टिखण्डका उपसंहार	२१३
२-सतीखण्ड		
१.	सतीचरित्रवर्णन, दक्षयज्ञविध्वंसका संक्षिप्त वृत्तान्त तथा सतीका पार्वतीरूपमें हिमालयके यहाँ जन्म लेना	२१७
२.	सदाशिवसे त्रिदेवोंकी उत्पत्ति, ब्रह्माजीसे देवता आदिकी सृष्टिके पश्चात् देवी सन्ध्या तथा कामदेवका प्राकट्य	२१९
३.	कामदेवको विविध नामों एवं वरोंकी प्राप्ति, कामके प्रभावसे ब्रह्मा तथा ऋषिगणोंका मुग्ध होना, धर्मद्वारा स्तुति करनेपर भगवान् शिवका प्राकट्य और ब्रह्मा तथा ऋषियोंको समझाना, ब्रह्मा तथा ऋषियोंसे अग्निध्यात आदि पितृगणोंकी उत्पत्ति, ब्रह्माद्वारा कामको शापकी प्राप्ति तथा निवारणका उपाय	२२१
४.	कामदेवके विवाहका वर्णन	२२५
५.	ब्रह्माकी मानसपुत्री कुमारी सन्ध्याका आख्यान	२२७
६.	सन्ध्याद्वारा तपस्या करना, प्रसन्न हो भगवान् शिवका उसे दर्शन देना, सन्ध्याद्वारा की गयी शिवस्तुति, सन्ध्याको अनेक वरोंकी प्राप्ति तथा महर्षि मेधातिथिके यज्ञमें जानेका आदेश प्राप्त होना	२३०
७.	महर्षि मेधातिथिकी यज्ञाग्निमें सन्ध्याद्वारा शरीर-त्याग, पुनः अरुन्धतीके रूपमें यज्ञाग्निसे उत्पत्ति एवं वसिष्ठमुनिके साथ उसका विवाह	२३३
८.	कामदेवके सहचर वसन्तके आविर्भावका वर्णन	२३४
९.	कामदेवद्वारा भगवान् शिवको विचलित न कर पाना, ब्रह्माजीद्वारा कामदेवके सहायक मारगणोंकी उत्पत्ति; ब्रह्माजीका उन सबको शिवके पास भेजना, उनका वहाँ विफल होना, गणोंसहित कामदेवका वापस अपने आश्रमको लौटना	२३७

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१०.	ब्रह्मा और विष्णुके संवादमें शिवमाहात्म्यका वर्णन	२३९
११.	ब्रह्माद्वारा जगदम्बिका शिवाकी स्तुति तथा वरकी प्राप्ति	२४२
१२.	दक्षप्रजापतिका तपस्याके प्रभावसे शक्तिका दर्शन और उनसे रुद्रमोहनकी प्रार्थना करना	२४५
१३.	ब्रह्माकी आज्ञासे दक्षद्वारा मैथुनी सृष्टिका आरम्भ, अपने पुत्र हर्यश्वों तथा सबलाश्वोंको निवृत्तिमार्गमें भेजनेके कारण दक्षका नारदको शाप देना	२४७
१४.	दक्षकी साठ कन्याओंका विवाह, दक्षके यहाँ देवी शिवा (सती)-का प्राकट्य, सतीकी बाललीलाका वर्णन	२४९
१५.	सतीद्वारा नन्दा-व्रतका अनुष्ठान तथा देवताओंद्वारा शिवस्तुति	२५१
१६.	ब्रह्मा और विष्णुद्वारा शिवसे विवाहके लिये प्रार्थना करना तथा उनकी इसके लिये स्वीकृति	२५५
१७.	भगवान् शिवद्वारा सतीको वर-प्राप्ति और शिवका ब्रह्माजीको दक्ष प्रजापतिके पास भेजना	२५७
१८.	देवताओं और मुनियोंसहित भगवान् शिवका दक्षके घर जाना, दक्षद्वारा सबका सत्कार एवं सती तथा शिवका विवाह	२६१
१९.	शिवका सतीके साथ विवाह, विवाहके समय शम्भुकी मायासे ब्रह्माका मोहित होना और विष्णुद्वारा शिवतत्त्वका निरूपण	२६३
२०.	ब्रह्माजीका 'रुद्रशिर' नाम पड़नेका कारण, सती एवं शिवका विवाहोत्सव, विवाहके अनन्तर शिव और और सतीका वृषभारूढ़ हो कैलासके लिये प्रस्थान	२६६
२१.	कैलास पर्वतपर भगवान् शिव एवं सतीकी मधुर लीलाएँ	२६९
२२.	सती और शिवका विहार-वर्णन	२७१
२३.	सतीके पूछनेपर शिवद्वारा भक्तिकी महिमा तथा नवधा भक्तिका निरूपण	२७४
२४.	दण्डकारण्यमें शिवको रामके प्रति मस्तक झुकाते देख सतीका मोह तथा शिवकी आज्ञासे उनके द्वारा रामकी परीक्षा	२७७
२५.	श्रीशिवके द्वारा गोलोकधाममें श्रीविष्णुका गोपेशके पदपर अभिषेक, श्रीरामद्वारा सतीके मनका सन्देह दूर करना, शिवद्वारा सतीका मानसिक रूपसे परित्याग ..	२८०
२६.	सतीके उपाख्यानमें शिवके साथ दक्षका विरोध-वर्णन	२८३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२७.	दक्षप्रजापतिद्वारा महान् यज्ञका प्रारम्भ, यज्ञमें दक्षद्वारा शिवके न बुलाये जानेपर दधीचिद्वारा दक्षकी भर्त्सना करना, दक्षके द्वारा शिव-निन्दा करनेपर दधीचिका वहाँसे प्रस्थान.....	२८५
२८.	दक्षयज्ञका समाचार पाकर एवं शिवकी आज्ञा प्राप्तकर देवी सतीका शिवगणोंके साथ पिताके यज्ञमण्डपके लिये प्रस्थान.....	२८८
२९.	यज्ञशालामें शिवका भाग न देखकर तथा दक्षद्वारा शिवनिन्दा सुनकर क्रुद्ध हो सतीका दक्ष तथा देवताओंको फटकारना और प्राणत्यागका निश्चय..	२९०
३०.	दक्षयज्ञमें सतीका योगाग्निसे अपने शरीरको भस्म कर देना, भृगुद्वारा यज्ञकुण्डसे ऋभुओंको प्रकट करना, ऋभुओं और शंकरके गणोंका युद्ध, भयभीत गणोंका पलायित होना	२९३
३१.	यज्ञमण्डपमें आकाशवाणीद्वारा दक्षको फटकारना तथा देवताओंको सावधान करना	२९४
३२.	सतीके दग्ध होनेका समाचार सुनकर कुपित हुए शिवका अपनी जटासे वीरभद्र और महाकालीको प्रकट करके उन्हें यज्ञ-विध्वंस करनेकी आज्ञा देना	२९६
३३.	गणोंसहित वीरभद्र और महाकालीका दक्षयज्ञ-विध्वंसके लिये प्रस्थान.....	२९९
३४.	दक्ष तथा देवताओंका अनेक अपशकुनों एवं उत्पातसूचक लक्षणोंको देखकर भयभीत होना.	३००
३५.	दक्षद्वारा यज्ञकी रक्षाके लिये भगवान् विष्णुसे प्रार्थना, भगवान्का शिवद्रोहजनित संकटको टालनेमें अपनी असमर्थता बताते हुए दक्षको समझाना तथा सेनासहित वीरभद्रका आगमन	३०१
३६.	युद्धमें शिवगणोंसे पराजित हो देवताओंका पलायन, इन्द्र आदिके पूछनेपर बृहस्पतिका रुद्रदेवकी अजेयता बताना, वीरभद्रका देवताओंको युद्धके लिये ललकारना, श्रीविष्णु और वीरभद्रकी बातचीत	३०३
३७.	गणोंसहित वीरभद्रद्वारा दक्षयज्ञका विध्वंस, दक्षवध, वीरभद्रका वापस कैलास पर्वतपर जाना, प्रसन्न भगवान् शिवद्वारा उसे गणाध्यक्ष पद प्रदान करना ..	३०६
३८.	दधीचि मुनि और राजा क्षुवके विवादका इतिहास, शुक्राचार्यद्वारा दधीचिको महामृत्युंजयमन्त्रका उपदेश, मृत्युंजयमन्त्रके अनुष्ठानसे दधीचिको अवध्यताकी प्राप्ति	३०९
३९.	श्रीविष्णु और देवताओंसे अपराजित दधीचिद्वारा देवताओंको शाप देना तथा राजा क्षुवपर	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	अनुग्रह करना.....	३१३
४०.	देवताओंसहित ब्रह्माका विष्णुलोकमें जाकर अपना दुःख निवेदन करना, उन सभीको लेकर विष्णुका कैलासगमन तथा भगवान् शिवसे मिलना	३१५
४१.	देवताओंद्वारा भगवान् शिवकी स्तुति.....	३१७
४२.	भगवान् शिवका देवता आदिपर अनुग्रह, दक्षयज्ञ-मण्डपमें पधारकर दक्षको जीवित करना तथा दक्ष और विष्णु आदिद्वारा शिवकी स्तुति.....	३२०
४३.	भगवान् शिवका दक्षको अपनी भक्तवत्सलता, ज्ञानी भक्तकी श्रेष्ठता तथा तीनों देवोंकी एकता बताना, दक्षका अपने यज्ञको पूर्ण करना, देवताओंका अपने-अपने लोकोंको प्रस्थान तथा सतीखण्डका उपसंहार और माहात्म्य	३२२
	३-पार्वतीखण्ड	
१.	पितरोंकी कन्या मेनाके साथ हिमालयके विवाहका वर्णन	३२५
२.	पितरोंकी तीन मानसी कन्याओं—मेना, धन्या और कलावतीके पूर्वजन्मका वृत्तान्त तथा सनकादि-द्वारा प्राप्त शाप एवं वरदानका वर्णन	३२६
३.	विष्णु आदि देवताओंका हिमालयके पास जाना, उन्हें उमाराधनकी विधि बता स्वयं भी देवी जगदम्बाकी स्तुति करना	३२८
४.	उमादेवीका दिव्यरूपमें देवताओंको दर्शन देना और अवतार ग्रहण करनेका आश्वासन देना.....	३३०
५.	मेनाकी तपस्यासे प्रसन्न होकर देवीका उन्हें प्रत्यक्ष दर्शन देकर वरदान देना, मेनासे मेनाका जन्म.. ...	३३२
६.	देवी उमाका हिमवान्के हृदय तथा मेनाके गर्भमें आना, गर्भस्था देवीका देवताओंद्वारा स्तवन, देवीका दिव्यरूपमें प्रादुर्भाव, माता मेनासे वार्तालाप तथा पुनः नवजात कन्याके रूपमें परिवर्तित होना.....	३३५
७.	पार्वतीका नामकरण तथा उनकी बाललीलाएँ एवं विद्याध्ययन.....	३३७
८.	नारद मुनिका हिमालयके समीप गमन, वहाँ पार्वतीका हाथ देखकर भावी लक्षणोंको बताना, चिन्तित हिमवान्को शिवमहिमा बताना तथा शिवसे विवाह करनेका परामर्श देना	३३८
९.	पार्वतीके विवाहके सम्बन्धमें मेना और हिमालयका वार्तालाप, पार्वती और हिमालयद्वारा देखे गये अपने स्वप्नका वर्णन.....	३४१
१०.	शिवजीके ललाटसे भौमोत्पत्ति.....	३४२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
११.	भगवान् शिवका तपस्याके लिये हिमालयपर आगमन, वहाँ पर्वतराज हिमालयसे वार्तालाप	३४४
१२.	हिमवान्का पार्वतीको शिवकी सेवामें रखनेके लिये उनसे आज्ञा माँगना, शिवद्वारा कारण बताते हुए इस प्रस्तावको अस्वीकार कर देना	३४६
१३.	पार्वती और परमेश्वरका दार्शनिक संवाद, शिवका पार्वतीको अपनी सेवके लिये आज्ञा देना, पार्वतीका महेश्वरकी सेवामें तत्पर रहना	३४७
१४.	तारकासुरकी उत्पत्तिके प्रसंगमें दितिपुत्र वज्राङ्गकी कथा, उसकी तपस्या तथा वरप्राप्तिका वर्णन ..	३५०
१५.	चराङ्गीके पुत्र तारकासुरकी उत्पत्ति, तारकासुरकी तपस्या एवं ब्रह्माजीद्वारा उसे वरप्राप्ति, वरदानके प्रभावसे तीनों लोकोंपर उसका अत्याचार	३५२
१६.	तारकासुरसे उत्पीड़ित देवताओंको ब्रह्माजीद्वारा सान्त्वना प्रदान करना	३५४
१७.	इन्द्रके स्मरण करनेपर कामदेवका उपस्थित होना, शिवको तपसे विचलित करनेके लिये इन्द्रद्वारा कामदेवको भेजना	३५६
१८.	कामदेवद्वारा असमयमें वसन्त-ऋतुका प्रभाव प्रकट करना, कुछ क्षणके लिये शिवका मोहित होना, पुनः वैराग्य-भाव धारण करना	३५८
१९.	भगवान् शिवकी नेत्रज्वालासे कामदेवका भस्म होना और रतिका विलाप, देवताओंद्वारा रतिको सान्त्वना प्रदान करना और भगवान् शिवसे कामको जीवित करनेकी प्रार्थना करना	३५९
२०.	शिवकी क्रोधाग्निका वडवारूप-धारण और ब्रह्माद्वारा उसे समुद्रको समर्पित करना	३६२
२१.	कामदेवके भस्म हो जानेपर पार्वतीका अपने घर आगमन, हिमवान् तथा मेनाद्वारा उन्हें धैर्य प्रदान करना, नारदद्वारा पार्वतीको पंचाक्षर मन्त्रका उपदेश	३६३
२२.	पार्वतीकी तपस्या एवं उसके प्रभावका वर्णन ..	३६५
२३.	हिमालय आदिका तपस्यानिरत पार्वतीके पास जाना, पार्वतीका पिता हिमालय आदिको अपने तपके विषयमें दृढ़ निश्चयकी बात बताना, पार्वतीके तपके प्रभावसे त्रैलोक्यका संतप्त होना, सभी देवताओंका भगवान् शंकरके पास जाना	३६८
२४.	देवताओंका भगवान् शिवसे पार्वतीके साथ विवाह करनेका अनुरोध, भगवान्का विवाहके दोष बताकर अस्वीकार करना तथा उनके पुनः प्रार्थना करनेपर स्वीकार कर लेना	३७०

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२५.	भगवान् शंकरकी आज्ञासे सप्तर्षियोंद्वारा पार्वतीके शिवविषयक अनुरागकी परीक्षा करना और वह वृत्तान्त भगवान् शिवको बताकर स्वर्गलोक जाना	३७३
२६.	पार्वतीकी परीक्षा लेनेके लिये भगवान् शिवका जटाधारी ब्राह्मणका वेष धारणकर पार्वतीके समीप जाना, शिव-पार्वती-संवाद	३७६
२७.	जटाधारी ब्राह्मणद्वारा पार्वतीके समक्ष शिवजीके स्वरूपकी निन्दा करना	३७८
२८.	पार्वतीद्वारा परमेश्वर शिवकी महत्ता प्रतिपादित करना और रोषपूर्वक जटाधारी ब्राह्मणको फटकारना, शिवका पार्वतीके समक्ष प्रकट होना	३८०
२९.	शिव और पार्वतीका संवाद, विवाहविषयक पार्वतीके अनुरोधको शिवद्वारा स्वीकार करना	३८२
३०.	पार्वतीके पिताके घरमें आनेपर महामहोत्सवका होना, महादेवजीका नटरूप धारणकर वहाँ उपस्थित होना तथा अनेक लीलाएँ दिखाना, शिवद्वारा पार्वतीकी याचना, किंतु माता-पिताके द्वारा मना करनेपर अन्तर्धान हो जाना	३८४
३१.	देवताओंके कहनेपर शिवका ब्राह्मण-वेषमें हिमालयके यहाँ जाना और शिवकी निन्दा करना ..	३८६
३२.	ब्राह्मण-वेषधारी शिवद्वारा शिवस्वरूपकी निन्दा सुनकर मेनाका कोपभवनमें गमन, शिवद्वारा सप्तर्षियोंका स्मरण और उन्हें हिमालयके घर भेजना, हिमालयकी शोभाका वर्णन तथा हिमालयद्वारा सप्तर्षियोंका स्वागत	३८८
३३.	वसिष्ठपत्नी अरुन्धतीद्वारा मेनाको समझाना तथा सप्तर्षियोंद्वारा हिमालयको शिवमाहात्म्य बताना	३९१
३४.	सप्तर्षियोंद्वारा हिमालयको राजा अनरण्यका आख्यान सुनाकर पार्वतीका विवाह शिवसे करनेकी प्रेरणा देना	३९४
३५.	धर्मराजद्वारा मुनि पिप्पलादकी भार्या सती पद्माके पातिव्रत्यकी परीक्षा, पद्माद्वारा धर्मराजको शाप प्रदान करना तथा पुनः चारों युगोंमें शापकी व्यवस्था करना, पातिव्रत्यसे प्रसन्न हो धर्मराजद्वारा पद्माको अनेक वर प्रदान करना, महर्षि वसिष्ठद्वारा हिमवान्से पद्माके दृष्टान्तद्वारा अपनी पुत्री शिवको सौंपनेके लिये कहना	३९६
३६.	सप्तर्षियोंके समझानेपर हिमवान्का शिवके साथ अपनी पुत्रीके विवाहका निश्चय करना, सप्तर्षियोंद्वारा शिवके पास जाकर उन्हें सम्पूर्ण वृत्तान्त बताकर अपने धामको जाना	३९८

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३७.	हिमालयद्वारा विवाहके लिये लग्नपत्रिकाप्रेषण, विवाहकी सामग्रियोंकी तैयारी तथा अनेक पर्वतों एवं नदियोंका दिव्य रूपमें सपरिवार हिमालयके घर आगमन	४००
३८.	हिमालयपुरीकी सजावट, विश्वकर्माद्वारा दिव्य-मण्डप एवं देवताओंके निवासके लिये दिव्यलोकोंका निर्माण करना	४०२
३९.	भगवान् शिवका नारदजीके द्वारा सब देवताओंको निमन्त्रण दिलाना, सबका आगमन तथा शिवका मंगलाचार एवं ग्रहपूजन आदि करके कैलाससे बाहर निकलना	४०३
४०.	शिवबरातकी शोभा, भगवान् शिवका बरात लेकर हिमालयपुरीकी ओर प्रस्थान	४०६
४१.	नारदद्वारा हिमालयगृहमें जाकर विश्वकर्माद्वारा बनाये गये विवाहमण्डपका दर्शनकर मोहित होना और वापस आकर उस विचित्र रचनाका वर्णन करना	४०८
४२.	हिमालयद्वारा प्रेषित मूर्तिमान् पर्वतों और ब्राह्मणोंद्वारा बरातकी अगवानी, देवताओं और पर्वतोंके मिलापका वर्णन	४१०
४३.	मेनाद्वारा शिवको देखनेके लिये महलकी छतपर जाना, नारदद्वारा सबका दर्शन कराना, शिवद्वारा अद्भुत लीलाका प्रदर्शन, शिवगणों तथा शिवके भयंकर वेषको देखकर मेनाका मूर्च्छित होना	४११
४४.	शिवजीके रूपको देखकर मेनाका विलाप, पार्वती तथा नारद आदि सभीको फटकारना, शिवके साथ कन्याका विवाह न करनेका हठ, विष्णुद्वारा मेनाको समझाना	४१४
४५.	भगवान् शिवका अपने परम सुन्दर दिव्य रूपको प्रकट करना, मेनाकी प्रसन्नता और क्षमा-प्रार्थना तथा पुरवासिनी स्त्रियोंका शिवके रूपका दर्शन करके जन्म और जीवनको सफल मानना	४१८
४६.	नगरमें बरातियोंका प्रवेश, द्वाराचार तथा पार्वतीद्वारा कुलदेवताका पूजन	४२०
४७.	पाणिग्रहणके लिये हिमालयके घर शिवके गमनोत्सवका वर्णन	४२२
४८.	शिव-पार्वतीके विवाहका प्रारम्भ, हिमालयद्वारा शिवके गोत्रके विषयमें प्रश्न होनेपर नारदजीके द्वारा उत्तरके रूपमें शिवमाहात्म्य प्रतिपादित करना, हर्षयुक्त हिमालयद्वारा कन्यादानकर विविध उपहार प्रदान करना	४२४
४९.	अग्निपरिक्रमा करते समय पार्वतीके पदनखको	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	देखकर ब्रह्माका मोहग्रस्त होना, बालखिल्योंकी उत्पत्ति, शिवका कुपित होना, देवताओंद्वारा शिवस्तुति	४२६
५०.	शिव-शिवके विवाहकृत्यसम्पादनके अनन्तर देवियोंका शिवसे मधुर वार्तालाप	४२८
५१.	रतिके अनुरोधपर श्रीशंकरका कामदेवको जीवित करना, देवताओंद्वारा शिवस्तुति	४३०
५२.	हिमालयद्वारा सभी बरातियोंको भोजन कराना, शिवका विश्वकर्माद्वारा निर्मित वासगृहमें शयन करके प्रातःकाल जनवासेमें आगमन	४३२
५३.	चतुर्थीकर्म, बरातका कई दिनोंतक ठहरना, सप्तर्षियोंके समझानेसे हिमालयका बरातको विदा करनेके लिये राजी होना, मेनाका शिवको अपनी कन्या सौंपना तथा बरातका पुरीके बाहर जाकर ठहरना	४३४
५४.	मेनाकी इच्छाके अनुसार एक ब्राह्मणपत्नीका पार्वतीको पातिव्रतधर्मका उपदेश देना	४३५
५५.	शिव-पार्वती तथा बरातकी विदाई, भगवान् शिवका समस्त देवताओंको विदा करके कैलासपर रहना और शिव-विवाहोपाख्यानके श्रवणकी महिमा	४३९
४-कुमारखण्ड		
१.	कैलासपर भगवान् शिव एवं पार्वतीका विहार	४४१
२.	भगवान् शिवके तेजसे स्कन्दका प्रादुर्भाव और सर्वत्र महान् आनन्दोत्सवका होना	४४४
३.	महर्षि विश्वामित्रद्वारा बालक स्कन्दका संस्कार सम्पन्न करना, बालक स्कन्दद्वारा क्रौंचपर्वतका भेदन, इन्द्रद्वारा बालकपर वज्रप्रहार, शाख-विशाख आदिका उत्पन्न होना, कार्तिकेयका षण्मुख होकर छः कृत्तिकाओंका दुग्धपान करना	४४७
४.	पार्वतीके कहनेपर शिवद्वारा देवताओं तथा कर्मसाक्षी धर्मादिकोंसे कार्तिकेयके विषयमें जिज्ञासा करना और अपने गणोंको कृत्तिकाओंके पास भोजना, नन्दिकेश्वर तथा कार्तिकेयका वार्तालाप, कार्तिकेयका कैलासके लिये प्रस्थान	४४८
५.	पार्वतीके द्वारा प्रेषित रथपर आरूढ़ हो कार्तिकेयका कैलासगमन, कैलासपर महान् उत्सव होना, कार्तिकेयका महाभियेक तथा देवताओंद्वारा विविध अस्त्र-शस्त्र तथा रत्नाभूषण प्रदान करना, कार्तिकेयका ब्रह्माण्डका अधिपतित्व प्राप्त करना	४५१
६.	कुमार कार्तिकेयकी ऐश्वर्यमयी बाललीला	४५४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
७.	तारकासुरसे सम्बद्ध देवासुर-संग्राम	४५६
८.	देवराज इन्द्र, विष्णु तथा वीरक आदिके साथ तारकासुरका युद्ध	४५७
९.	ब्रह्माजीका कार्तिकेयको तारकके वधके लिये प्रेरित करना, तारकासुरद्वारा विष्णु तथा इन्द्रकी भर्त्सना, पुनः इन्द्रादिके साथ तारकासुरका युद्ध	४५९
१०.	कुमार कार्तिकेय और तारकासुरका भीषण संग्राम, कार्तिकेयद्वारा तारकासुरका वध, देवताओंद्वारा दैत्य-सेनापर विजय प्राप्त करना, सर्वत्र विजयोल्लास, देवताओंद्वारा शिवा-शिव तथा कुमारकी स्तुति	४६२
११.	कार्तिकेयद्वारा बाण तथा प्रलम्ब आदि असुरोंका वध, कार्तिकेयचरितके श्रवणका माहात्म्य	४६४
१२.	विष्णु आदि देवताओं तथा पर्वतोंद्वारा कार्तिकेयकी स्तुति और वरप्राप्ति, देवताओंके साथ कुमारका कैलासगमन, कुमारको देखकर शिव-पार्वतीका आनन्दित होना, देवोंद्वारा शिवस्तुति	४६५
१३.	गणेशोत्पत्तिका आख्यान, पार्वतीका अपने पुत्र गणेशको अपने द्वारपर नियुक्त करना, शिव और गणेशका वार्तालाप	४६७
१४.	द्वाररक्षक गणेश तथा शिवगणोंका परस्पर विवाद	४६९
१५.	गणेश तथा शिवगणोंका भयंकर युद्ध, पार्वतीद्वारा दो शक्तियोंका प्राकट्य, शक्तियोंका अद्भुत पराक्रम और शिवका कुपित होना	४७२
१६.	विष्णु तथा गणेशका युद्ध, शिवद्वारा त्रिशूलसे गणेशका सिर काटा जाना	४७४
१७.	पुत्रके वधसे कुपित जगदम्बाका अनेक शक्तियोंको उत्पन्न करना और उनके द्वारा प्रलय मचाया जाना, देवताओं और ऋषियोंका स्तवनद्वारा पार्वतीको प्रसन्न करना, शिवजीके आज्ञानुसार हाथीका सिर लाया जाना और उसे गणेशके धड़से जोड़कर उन्हें जीवित करना ..	४७६
१८.	पार्वतीद्वारा गणेशको वरदान, देवोंद्वारा उन्हें अग्रपूज्य माना जाना, शिवजीद्वारा गणेशको सर्वाध्यक्षपद प्रदान करना, गणेशचतुर्थीव्रतविधान तथा उसका माहात्म्य, देवताओंका स्वलोक-गमन	४७९
१९.	स्वामिकार्तिकेय और गणेशकी बाल-लीला, विवाहके विषयमें दोनोंका परस्पर विवाद, शिवजीद्वारा पृथ्वी-परिक्रमाका आदेश, कार्तिकेयका प्रस्थान, बुद्धिमान् गणेशजीका पृथ्वीरूप माता-पिताकी परिक्रमा और प्रसन्न शिवा-शिवद्वारा गणेशके प्रथम विवाहकी	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	स्वीकृति	४८२
२०.	प्रजापति विश्वरूपकी सिद्धि तथा बुद्धि नामक दो कन्याओंके साथ गणेशजीका विवाह तथा उनसे 'क्षेम' तथा 'लाभ' नामक दो पुत्रोंकी उत्पत्ति, कुमार कार्तिकेयका पृथ्वीकी परिक्रमाकर लौटना और क्षुब्ध होकर क्रौंचपर्वतपर चला जाना, कुमार-खण्डके श्रवणकी महिमा	४८४
	५-युद्धखण्ड	
१.	तारकासुरके पुत्र तारकाक्ष, विद्युन्माली एवं कमलाक्षकी तपस्यासे प्रसन्न ब्रह्माद्वारा उन्हें वरकी प्राप्ति, तीनों पुरोंकी शोभाका वर्णन	४८७
२.	तारकपुत्रोंसे पीड़ित देवताओंका ब्रह्माजीके पास जाना और उनके परामर्शके अनुसार असुर-वधके लिये भगवान् शंकरकी स्तुति करना	४९०
३.	त्रिपुरके विनाशके लिये देवताओंका विष्णुसे निवेदन करना, विष्णुद्वारा त्रिपुरविनाशके लिये यज्ञकुण्डसे भूतसमुदायको प्रकट करना, त्रिपुरके भयसे भूतोंका पलायित होना, पुनः विष्णु-द्वारा देवकार्यकी सिद्धिके लिये उपाय सोचना	४९२
४.	त्रिपुरवासी दैत्योंको मोहित करनेके लिये भगवान् विष्णुद्वारा एक मुनिरूप पुरुषकी उत्पत्ति, उसकी सहायताके लिये नारदजीका त्रिपुरमें गमन, त्रिपुराधिपका दीक्षा ग्रहण करना	४९४
५.	मायावी यतिद्वारा अपने धर्मका उपदेश, त्रिपुरवासियोंका उसे स्वीकार करना, वेदधर्मके नष्ट हो जानेसे त्रिपुरमें अधर्माचरणकी प्रवृत्ति	४९७
६.	त्रिपुरध्वंसके लिये देवताओंद्वारा भगवान् शिवकी स्तुति	४९९
७.	भगवान् शिवकी प्रसन्नताके लिये देवताओंद्वारा मन्त्र-जप, शिवका प्राकट्य तथा त्रिपुरविनाशके लिये दिव्य रथ आदिके निर्माणके लिये विष्णुजीसे कहना	५०२
८.	विश्वकर्माद्वारा निर्मित सर्वदेवमय दिव्य रथका वर्णन	५०३
९.	ब्रह्माजीको सारथी बनाकर भगवान् शंकरका दिव्य रथमें आरूढ़ होकर अपने गणों तथा देवसेनाके साथ त्रिपुर-वधके लिये प्रस्थान, शिवका पशुपति नाम पड़नेका कारण	५०५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१०.	भगवान् शिवका त्रिपुरपर सन्धान करना, गणेशजीका विघ्न उपस्थित करना, आकाशवाणीद्वारा बोधित होनेपर शिवद्वारा विघ्ननाशक गणेशका पूजन, अभिजित् मुहूर्तमें तीनों पुरोंका एकत्र होना और शिवद्वारा बाणाग्निसे सम्पूर्ण त्रिपुरको भस्म करना, मयदानवका वचा रहना	५०६
११.	त्रिपुरदाहके अनन्तर भगवान् शिवके रौद्ररूपसे भयभीत देवताओंद्वारा उनकी स्तुति और उनसे भक्तिका वरदान प्राप्त करना	५०८
१२.	त्रिपुरदाहके अनन्तर शिवभक्त मयदानवका भगवान् शिवकी शरणमें आना, शिवद्वारा उसे अपनी भक्ति प्रदानकर वितललोकमें निवास करनेकी आज्ञा देना, देवकार्य सम्पन्नकर शिवजीका अपने लोकमें जाना..	५१०
१३.	वृहस्पति तथा इन्द्रका शिवदर्शनके लिये कैलासकी ओर प्रस्थान, सर्वज्ञ शिवका उनकी परीक्षा लेनेके लिये दिगम्बर जटाधारी रूप धारणकर मार्ग रोकना, क्रुद्ध इन्द्रद्वारा उनपर वज्रप्रहारकी चेष्टा, शंकरद्वारा उनकी भुजाको स्तम्भित कर देना, वृहस्पतिद्वारा उनकी स्तुति, शिवका प्रसन्न होना और अपनी नेत्राग्निको क्षार-समुद्रमें फेंकना	५१२
१४.	क्षारसमुद्रमें प्रक्षिप्त भगवान् शंकरकी नेत्राग्निसे समुद्रके पुत्रके रूपमें जलन्धरका प्राकट्य, कालनेमिकी पुत्री वृन्दाके साथ उसका विवाह	५१४
१५.	राहुके शिरश्छेद तथा समुद्रमन्थनके समयके देवताओंके छलको जानकर जलन्धरद्वारा क्रुद्ध होकर स्वर्गपर आक्रमण, इन्द्रादि देवोंकी पराजय, अमरावतीपर जलन्धरका आधिपत्य, भयभीत देवताओंका सुमेरुकी गुफामें छिपना	५१५
१६.	जलन्धरसे भयभीत देवताओंका विष्णुके समीप जाकर स्तुति करना, विष्णुसहित देवताओंका जलन्धरकी सेनाके साथ भयंकर युद्ध	५१८
१७.	विष्णु और जलन्धरके युद्धमें जलन्धरके पराक्रमसे सन्तुष्ट विष्णुका देवों एवं लक्ष्मीसहित उसके नगरमें निवास करना	५२०
१८.	जलन्धरके आधिपत्यमें रहनेवाले दुखी देवताओंद्वारा शंकरकी स्तुति, शंकरजीका देवर्षि नारदको जलन्धरके पास भेजना, वहाँ देवोंको आश्वस्त करके नारदजीका जलन्धरकी सभामें जाना, उसके ऐश्वर्यको देखना तथा पार्वतीके सौन्दर्यका वर्णनकर उसे प्राप्त करनेके लिये जलन्धरको परामर्श देना	५२२

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
१९.	पार्वतीको प्राप्त करनेके लिये जलन्धरका शंकरके पास दूतप्रेषण, उसके वचनसे उत्पन्न क्रोधसे शम्भुके भ्रूमध्यसे एक भयंकर पुरुषकी उत्पत्ति, उससे भयभीत जलन्धरके दूतका पलायन, उस पुरुषका कीर्तिमुख नामसे शिवगणोंमें प्रतिष्ठित होना तथा शिवद्वारपर स्थित रहना	५२४
२०.	दूतके द्वारा कैलासका वृत्तान्त जानकर जलन्धरका अपनी सेनाको युद्धका आदेश देना, भयभीत देवोंका शिवकी शरणमें जाना, शिवगणों तथा जलन्धरकी सेनाका युद्ध, शिवद्वारा कृत्याको उत्पन्न करना, कृत्याद्वारा शुक्राचार्यको छिपा लेना	५२६
२१.	नन्दी, गणेश, कार्तिकेय आदि शिवगणोंका कालनेमि, शुम्भ तथा निशुम्भके साथ घोर संग्राम, वीरभद्र तथा जलन्धरका युद्ध, भयाकुल शिवगणोंका शिवजीको सारा वृत्तान्त बताना	५२८
२२.	श्रीशिव और जलन्धरका युद्ध, जलन्धरद्वारा गान्धर्वी मायासे शिवको मोहितकर शीघ्र ही पार्वतीके पास पहुँचना, उसकी मायाको जानकर पार्वतीका अदृश्य हो जाना और भगवान् विष्णुको जलन्धरपत्नी वृन्दाके पास जानेके लिये कहना	५३०
२३.	विष्णुद्वारा माया उत्पन्नकर वृन्दाको स्वर्णके माध्यमसे मोहित करना और स्वयं जलन्धरका रूप धारणकर वृन्दाके पातिव्रतका हरण करना, वृन्दाद्वारा विष्णुको शाप देना तथा वृन्दाके तेजका पार्वतीमें विलीन होना	५३२
२४.	दैत्यराज जलन्धर तथा भगवान् शिवका घोर संग्राम, भगवान् शिवद्वारा चक्रसे जलन्धरका शिरश्छेदन, जलन्धरका तेज शिवमें प्रविष्ट होना, जलन्धर-वधसे जगत्में सर्वत्र शान्तिका विस्तार	५३५
२५.	जलन्धरवधसे प्रसन्न देवताओंद्वारा भगवान् शिवकी स्तुति	५३७
२६.	विष्णुजीके मोहभंगके लिये शंकरजीकी प्रेरणासे देवोंद्वारा मूलप्रकृतिकी स्तुति, मूलप्रकृतिद्वारा आकाशवाणीके रूपमें देवोंको आश्वासन, देवताओंद्वारा त्रिगुणात्मिका देवियोंका स्तवन, विष्णुका मोहनाश, धात्री (औंला), मालती तथा तुलसीकी उत्पत्तिका आख्यान	५३९
२७.	शंखचूडकी उत्पत्तिकी कथा	५४१
२८.	शंखचूडकी पुष्कर-क्षेत्रमें तपस्या, ब्रह्माद्वारा उसे वरकी प्राप्ति, ब्रह्माकी प्रेरणासे शंखचूडका तुलसीसे विवाह	५४३

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२९.	शंखचूडका राज्यपदपर अभिषेक, उसके द्वारा देवोंपर विजय, दुखी देवोंका ब्रह्माजीके साथ वैकुण्ठगमन, विष्णुद्वारा शंखचूडके पूर्वजन्मका वृत्तान्त बताना और विष्णु तथा ब्रह्माका शिवलोक-गमन.....	५४५		उत्पत्ति तथा माहात्म्यकी कथा.....	५६५
३०.	ब्रह्मा तथा विष्णुका शिवलोक पहुँचना, शिवलोककी तथा शिवसभाकी शोभाका वर्णन, शिवसभाके मध्य उन्हें अम्बासहित भगवान् शिवके दिव्यस्वरूपका दर्शन और शंखचूडसे प्राप्त कष्टोंसे मुक्तिके लिये प्रार्थना	५४७	४२.	अन्धकासुरकी उत्पत्तिकी कथा, शिवके वरदानसे हिरण्याक्षद्वारा अन्धकको पुत्ररूपमें प्राप्त करना, हिरण्याक्षद्वारा पृथ्वीको पाताललोकमें ले जाना, भगवान् विष्णुद्वारा वाराहरूप धारणकर हिरण्याक्षका वधकर पृथ्वीको यथास्थान स्थापित करना	५६६
३१.	शिवद्वारा ब्रह्मा-विष्णुको शंखचूडका पूर्ववृत्तान्त बताना और देवोंको शंखचूडवधका आश्वासन देना	५४८	४३.	हिरण्यकशिपुकी तपस्या, ब्रह्मासे वरदान पाकर उसका अत्याचार, भगवान् नृसिंहद्वारा उसका वध और प्रह्लादको राज्यप्राप्ति	५७०
३२.	भगवान् शिवके द्वारा शंखचूडको समझानेके लिये गन्धर्वराज चित्ररथ (पुष्पदन्त)-को दूतके रूपमें भेजना, शंखचूडद्वारा सन्देशकी अवहेलना और युद्ध करनेका अपना निश्चय बताना, पुष्पदन्तका वापस आकर सारा वृत्तान्त शिवसे निवेदित करना	५५१	४४.	अन्धकासुरकी तपस्या, ब्रह्माद्वारा उसे अनेक वरोंकी प्राप्ति, त्रिलोकीको जीतकर उसका स्वेच्छाचारमें प्रवृत्त होना, मन्त्रियोंद्वारा पार्वतीके सौन्दर्यको सुनकर मुग्ध हो शिवके पास सन्देश भेजना और शिवका उत्तर सुनकर क्रुद्ध हो युद्धके लिये उद्योग करना	५७२
३३.	शंखचूडसे युद्धके लिये अपने गणोंके साथ भगवान् शिवका प्रस्थान	५५२	४५.	अन्धकासुरका शिवकी सेनाके साथ युद्ध	५७६
३४.	तुलसीसे विदा लेकर शंखचूडका युद्धके लिये ससैन्य पुष्पभद्रा नदीके तटपर पहुँचना	५५४	४६.	भगवान् शिव और अन्धकासुरका युद्ध, अन्धककी मायासे उसके रक्तसे अनेक अन्धकगणोंकी उत्पत्ति, शिवकी प्रेरणासे विष्णुका कालीरूप धारणकर दानवोंके रक्तका पान करना, शिवद्वारा अन्धकको अपने त्रिशूलमें लटका लेना, अन्धककी स्तुतिसे प्रसन्न हो शिवद्वारा उसे गाणपत्य पद प्रदान करना	५७८
३५.	शंखचूडका अपने एक बुद्धिमान् दूतको शंकरके पास भेजना, दूत तथा शिवकी वार्ता, शंकरका सन्देश लेकर दूतका वापस शंखचूडके पास आना	५५५	४७.	शुक्राचार्यद्वारा युद्धमें मरे हुए दैत्योंको संजीवनी-विद्यासे जीवित करना, दैत्योंका युद्धके लिये पुनः उद्योग, नन्दीश्वरद्वारा शिवको यह वृत्तान्त बतलाना, शिवकी आज्ञासे नन्दीद्वारा युद्धस्थलसे शुक्राचार्यको शिवके पास लाना, शिवद्वारा शुक्राचार्यको निगलना ..	५८१
३६.	शंखचूडको उद्देश्यकर देवताओंका दानवोंके साथ महासंग्राम	५५७	४८.	शुक्राचार्यकी अनुपस्थितिसे अन्धकादि दैत्योंका दुखी होना, शिवके उदरमें शुक्राचार्यद्वारा सभी लोकों तथा अन्धकासुरके युद्धको देखना और फिर शिवके शुक्ररूपमें बाहर निकलना, शिव-पार्वतीका उन्हें पुत्ररूपमें स्वीकारकर विदा करना	५८३
३७.	शंखचूडके साथ कार्तिकेय आदि महावीरोंका युद्ध	५५८	४९.	शुक्राचार्यद्वारा शिवके उदरमें जपे गये मन्त्रका वर्णन, अन्धकद्वारा भगवान् शिवकी नामरूपी स्तुति-प्रार्थना, भगवान् शिवद्वारा अन्धकासुरको जीवनदानपूर्वक गाणपत्य पद प्रदान करना	५८५
३८.	श्रीकालीका शंखचूडके साथ महान् युद्ध, आकाशवाणी सुनकर कालीका शिवके पास आकर युद्धका वृत्तान्त बताना	५६०	५०.	शुक्राचार्यद्वारा काशीमें शुकेश्वर लिंगकी स्थापनाकर उनकी आराधना करना, मूर्त्यष्टक स्तोत्रसे उनका स्तवन, शिवजीका प्रसन्न होकर उन्हें मृतसंजीवनी-विद्या प्रदान करना और ग्रहोंके मध्य प्रतिष्ठित करना	५८७
३९.	शिव और शंखचूडके महाभयंकर युद्धमें शंखचूडके सैनिकोंके संहारका वर्णन	५६१			
४०.	शिव और शंखचूडका युद्ध, आकाशवाणीद्वारा शंकरको युद्धसे विरत करना, विष्णुका ब्राह्मणरूप धारणकर शंखचूडका कवच माँगना, कवचहीन शंखचूडका भगवान् शिवद्वारा वध, सर्वत्र हर्षोल्लास	५६३			
४१.	शंखचूडका रूप धारणकर भगवान् विष्णुद्वारा तुलसीके शीलका हरण, तुलसीद्वारा विष्णुको पाषाण होनेका शाप देना, शंकरजीद्वारा तुलसीको सान्त्वना, शंख, तुलसी, गण्डकी एवं शालग्रामकी				

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
५१.	प्रह्लादकी वंशपरम्परामें बलिपुत्र बाणासुरकी उत्पत्तिकी कथा, शिवभक्त बाणासुरद्वारा ताण्डव नृत्यके प्रदर्शनसे शंकरको प्रसन्न करना, वरदानके रूपमें शंकरका बाणासुरकी नगरीमें निवास करना, शिव-पार्वतीका विहार, पार्वतीद्वारा बाणपुत्री ऊषाको वरदान	५८९
५२.	अभिमानी बाणासुरद्वारा भगवान् शिवसे युद्धकी याचना, बाणपुत्री ऊषाका रात्रिके समय स्वप्नमें अनिरुद्धके साथ मिलन, चित्रलेखाद्वारा योगबलसे अनिरुद्धका द्वारकासे अपहरण, अन्तःपुरमें अनिरुद्ध और ऊषाका मिलन तथा द्वारपालोंद्वारा यह समाचार बाणासुरको बताना	५९२
५३.	क्रुद्ध बाणासुरका अपनी सेनाके साथ अनिरुद्धपर आक्रमण और उसे नागपाशमें बाँधना, दुर्गाके स्तवनद्वारा अनिरुद्धका बन्धनमुक्त होना	५९४
५४.	नारदजीद्वारा अनिरुद्धके बन्धनका समाचार पाकर श्रीकृष्णकी शोणितपुरपर चढ़ाई, शिवके साथ उनका घोर युद्ध, शिवकी आज्ञासे श्रीकृष्णका उन्हें जूम्भणास्त्रसे मोहित करके बाणासुरकी सेनाका संहार करना	५९६
५५.	भगवान् कृष्ण तथा बाणासुरका संग्राम, श्रीकृष्णद्वारा बाणकी भुजाओंका काट जाना, सिर काटनेके लिये	

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
	उद्यत हुए श्रीकृष्णको शिवका रोकना और उन्हें समझाना, बाणका गर्वापहरण, श्रीकृष्ण और बाणासुरकी मित्रता, ऊषा-अनिरुद्धको लेकर श्रीकृष्णका द्वारका आना	५९९
५६.	बाणासुरका ताण्डवनृत्यद्वारा भगवान् शिवको प्रसन्न करना, शिवद्वारा उसे अनेक मनोऽभिलषित वरदानोंकी प्राप्ति, बाणासुरकृत शिवस्तुति	६०१
५७.	महिषासुरके पुत्र गजासुरकी तपस्या तथा ब्रह्माद्वारा वरप्राप्ति, उन्मत्त गजासुरद्वारा अत्याचार, उसका काशीमें आना, देवताओंद्वारा भगवान् शिवसे उसके वधकी प्रार्थना, शिवद्वारा उसका वध और उसकी प्रार्थनासे उसका चर्म धारणकर 'कृत्तिवासा' नामसे विख्यात होना एवं कृत्तिवासेश्वर लिंगकी स्थापना करना	६०२
५८.	काशीके व्याघ्रेश्वर लिंग-माहात्म्यके सन्दर्भमें दैत्य दुन्दुभिनिर्हादके वधकी कथा	६०५
५९.	काशीके कन्दुकेश्वर शिवलिंगके प्रादुर्भावमें पार्वती-द्वारा विदल एवं उत्पल दैत्योके वधकी कथा, रुद्र-संहिताका उपसंहार तथा इसका माहात्म्य	६०७
६०.	नम्र-निवेदन एवं क्षमा-प्रार्थना	६०९

चित्र-सूची (रंगीन चित्र)

विषय	पृष्ठ-संख्या
१- शिव-परिवार	आवरण-पृष्ठ प्रथम
२- तपस्यारत पार्वतीको भगवान् शिवका दर्शन ... " "	द्वितीय
३- देवताओं और मुनियोंद्वारा शिवस्तुति	३
४- सतीजीका आश्चर्य	४
५- गुफामें गौरी-शंकर	५
६- पार्वतीजी और सप्तर्षि	६

विषय	पृष्ठ-संख्या
७- श्रीशिवजीकी विकट बरात	७
८- मयूरवाहन भगवान् कार्तिकेय	८
९- श्रीनारायणजीके नाभिकमलसे ब्रह्माजीका प्राकट्य	९
१०- वरवेपमें भगवान् शिव	१०
११- वधूवेपमें भगवती पार्वती	१०

(सादे चित्र)

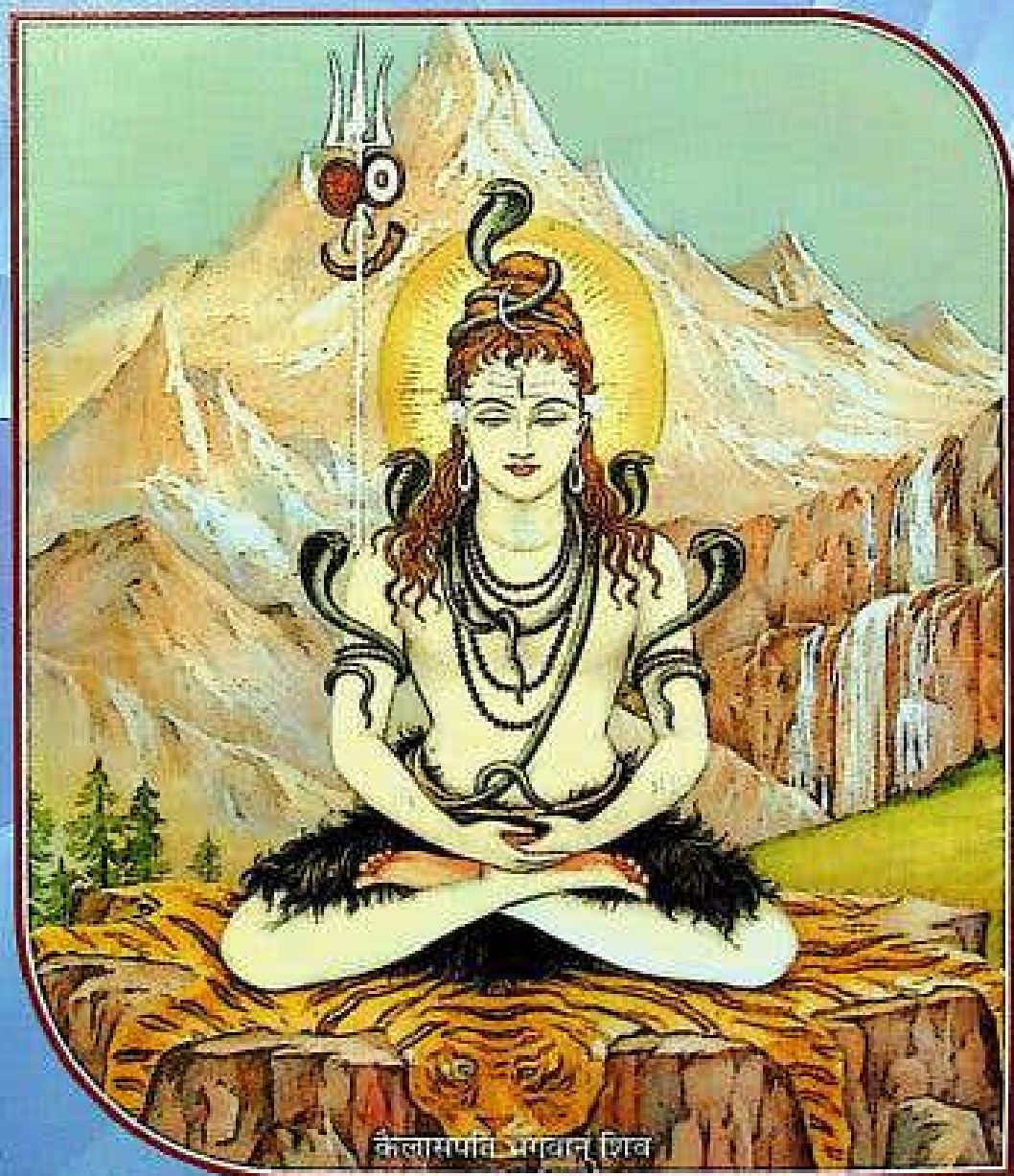
१- माता-पिताका पार्वतीको तपके लिये स्वीकृति देना ..	४५
२- गणेश-परिवार	५४
३- श्रीसूतजीद्वारा शौनकजीको शिवमहापुराणकी महिमा बताना	६१
४- शिवपुराणके कथाश्रवणसे ब्राह्मण देवराजको शिवलोक	

ले जानेके लिये विमान लेकर शिवपार्षदोंका उपस्थित होना	६५
५- चंचुलाका गोकर्णक्षेत्रमें शिवकथाका श्रवण करना	६७
६- शिवकथाश्रवणसे चंचुलाको शिवलोककी प्राप्ति .	७०

ॐ श्रीपरमात्मने नमः

कल्याण

मूल्य ₹ २५०



केलामर्षी भगवान् शिव

वर्ष
९२

श्रीशिवमहापुराणाङ्क

[हिन्दी भाषानुवाद — उत्तरार्ध, श्लोकाङ्कसहित]

गीताप्रेस, गोरखपुर

संख्या
१

श्रीहरि:

‘श्रीशिवमहापुराणाङ्क’ की विषय-सूची

स्तुति-प्रार्थना

१- देवताओंद्वारा सिंहवाहिनी श्रीदुर्गाकी स्तुति	११	५- श्रीशिवमहापुराणसूक्तिसुधा	२३
२- अभिलाषाष्टक	२१	६- श्रीशिवमहापुराण [उत्तरार्ध]—एक सिंहावलोकन	
३- ‘व्रजामि शरणं शिवम्’	२२	(राधेश्याम खेमका)	२५

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
--------	------	--------------	--------	------	--------------

शतरुद्रसंहिता

<p>१. सूतजीसे शौनकादि मुनियोंका शिवावतारविषयक प्रश्न</p> <p>२. भगवान् शिवकी अष्टमूर्तियोंका वर्णन</p> <p>३. भगवान् शिवका अर्धनारीश्वर-अवतार एवं सतीका प्रादुर्भाव</p> <p>४. वाराहकल्पके प्रथमसे नवम द्वापरतक हुए व्यासों एवं शिवावतारोंका वर्णन</p> <p>५. वाराहकल्पके दसवेंसे अट्ठाईसवें द्वापरतक होनेवाले व्यासों एवं शिवावतारोंका वर्णन</p> <p>६. नन्दीश्वरावतारवर्णन</p> <p>७. नन्दिकेश्वरका गणेश्वराधिपति पदपर अभिषेक एवं विवाह</p> <p>८. भैरवावतारवर्णन</p> <p>९. भैरवावतारलीलावर्णन</p> <p>१०. नृसिंहचरित्रवर्णन</p> <p>११. भगवान् नृसिंह और वीरभद्रका संवाद</p> <p>१२. भगवान् शिवका शरभावतार-धारण</p> <p>१३. भगवान् शंकरके गृहपति-अवतारकी कथा</p> <p>१४. विश्वानरके पुत्ररूपमें गृहपति नामसे शिवका प्रादुर्भाव</p> <p>१५. भगवान् शिवके गृहपति नामक अग्नीश्वरलिंगका माहात्म्य</p> <p>१६. यक्षेश्वरावतारका वर्णन</p> <p>१७. भगवान् शिवके महाकाल आदि प्रमुख दस अवतारोंका वर्णन</p> <p>१८. शिवजीके एकादश रुद्रावतारोंका वर्णन</p>	<p>१९. शिवजीके दुर्वासावतारकी कथा</p> <p>२०. शिवजीका हनुमान्के रूपमें अवतार तथा उनके चरितका वर्णन</p> <p>२१. शिवजीके महेशावतार-वर्णनक्रममें अम्बिकाके शापसे भैरवका वेतालरूपमें पृथ्वीपर अवतरित होना</p> <p>२२. शिवके वृषेश्वरावतार-वर्णनके प्रसंगमें समुद्र-मन्थनकी कथा</p> <p>२३. विष्णुद्वारा भगवान् शिवके वृषभेश्वरावतारका स्तवन</p> <p>२४. भगवान् शिवके पिप्पलादावतारका वर्णन</p> <p>२५. राजा अनरण्यकी पुत्री पद्माके साथ पिप्पलादका विवाह एवं उनके वैवाहिक जीवनका वर्णन ...</p> <p>२६. शिवके वैश्यनाथ नामक अवतारका वर्णन</p> <p>२७. भगवान् शिवके द्विजेश्वरावतारका वर्णन</p> <p>२८. नल एवं दमयन्तीके पूर्वजन्मकी कथा तथा शिवावतार यतीश्वरका हंसरूप धारण करना ...</p> <p>२९. भगवान् शिवके कृष्णदर्शन नामक अवतारकी कथा</p> <p>३०. भगवान् शिवके अवधूतेश्वरावतारका वर्णन</p> <p>३१. शिवजीके भिक्षुवर्यावतारका वर्णन</p> <p>३२. उपमन्युपर अनुग्रह करनेके लिये शिवके सुरेश्वरावतारका वर्णन</p> <p>३३. पार्वतीके मनोभावकी परीक्षा लेनेवाले ब्रह्मचारी-स्वरूप शिवावतारका वर्णन</p> <p>३४. भगवान् शिवके सुनर्तक नटावतारका वर्णन</p>
--	---

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३५.	परमात्मा शिवके द्विजावतारका वर्णन	१४१	३९.	मूक नामक दैत्यके वधका वर्णन	१५०
३६.	अश्वत्थामाके रूपमें शिवके अवतारका वर्णन ..	१४२	४०.	भीलस्वरूप गणेश्वर एवं तपस्वी अर्जुनका संवाद	१५३
३७.	व्यासजीका पाण्डवोंको सान्त्वना देकर अर्जुनको इन्द्रकील पर्वतपर तपस्या करने भेजना	१४४	४१.	भगवान् शिवके किरातेश्वरावतारका वर्णन	१५५
३८.	इन्द्रका अर्जुनको वरदान देकर शिवपूजनका उपदेश देना	१४७	४२.	भगवान् शिवके द्वादश ज्योतिर्लिंगरूप अवतारोंका वर्णन	१५८

कोटिरुद्रसंहिता

१.	द्वादश ज्योतिर्लिंगों एवं उनके उपलिंगोंके माहात्म्यका वर्णन	१६१	१८.	ओंकारेश्वर ज्योतिर्लिंगके प्रादुर्भाव एवं माहात्म्यका वर्णन	१९५
२.	काशीस्थित तथा पूर्व दिशामें प्रकटित विशेष एवं सामान्य लिंगोंका वर्णन	१६३	१९.	केदारेश्वर ज्योतिर्लिंगके प्राकट्य एवं माहात्म्यका वर्णन	१९६
३.	अत्रीश्वरलिंगके प्राकट्यके प्रसंगमें अनसूया तथा अत्रिकी तपस्याका वर्णन	१६४	२०.	भीमशंकर ज्योतिर्लिंगके माहात्म्य-वर्णन-प्रसंगमें भीमासुरके उपद्रवका वर्णन	१९८
४.	अनसूयाके पातिव्रतके प्रभावसे गंगाका प्राकट्य तथा अत्रीश्वरमाहात्म्यका वर्णन	१६६	२१.	भीमशंकर ज्योतिर्लिंगकी उत्पत्ति तथा उसके माहात्म्यका वर्णन	२००
५.	रेवानदीके तटपर स्थित विविध शिवलिंग-माहात्म्य-वर्णनके क्रममें द्विजदम्पतीका वृत्तान्त	१६८	२२.	परब्रह्म परमात्माका शिव-शक्तिरूपमें प्राकट्य, पंचक्रोशात्मिका काशीका अवतरण, शिवद्वारा अविमुक्त लिंगकी स्थापना, काशीकी महिमा तथा काशीमें रुद्रके आगमनका वर्णन	२०३
६.	नर्मदा एवं नन्दिकेश्वरके माहात्म्य-कथनके प्रसंगमें ब्राह्मणीकी स्वर्गप्राप्तिका वर्णन	१७०	२३.	काशीविश्वेश्वर ज्योतिर्लिंगके माहात्म्यके प्रसंगमें काशीमें मुक्तिक्रमका वर्णन	२०५
७.	नन्दिकेश्वरलिंगका माहात्म्य-वर्णन	१७३	२४.	त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंगके माहात्म्य-प्रसंगमें गौतम-ऋषिकी परोपकारी प्रवृत्तिका वर्णन	२०७
८.	पश्चिम दिशाके शिवलिंगोंके वर्णन-क्रममें महाबलेश्वरलिंगका माहात्म्य-कथन	१७४	२५.	मुनियोंका महर्षि गौतमके प्रति कपटपूर्ण व्यवहार	२०९
९.	संयोगवश हुए शिवपूजनसे चाण्डालीकी सद्गुणिका वर्णन	१७६	२६.	त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंग तथा गौतमी गंगाके प्रादुर्भावका आख्यान	२११
१०.	महाबलेश्वर शिवलिंगके माहात्म्य-वर्णन-प्रसंगमें राजा मित्रसहकी कथा	१७७	२७.	गौतमी गंगा एवं त्र्यम्बकेश्वर ज्योतिर्लिंगका माहात्म्यवर्णन	२१४
११.	उत्तरदिशामें विद्यमान शिवलिंगोंके वर्णन-क्रममें चन्द्रभाल एवं पशुपतिनाथलिंगका माहात्म्य-वर्णन ..	१७९	२८.	वैद्यनाथेश्वर ज्योतिर्लिंगके प्रादुर्भाव एवं माहात्म्यका वर्णन	२१६
१२.	हाटकेश्वरलिंगके प्रादुर्भाव एवं माहात्म्यका वर्णन	१८०	२९.	दारुकावनमें राक्षसोंके उपद्रव एवं सुप्रिय वैश्यकी शिवभक्तिका वर्णन	२१९
१३.	अन्धकेश्वरलिंगकी महिमा एवं बटुककी उत्पत्तिका वर्णन	१८३	३०.	नागेश्वर ज्योतिर्लिंगकी उत्पत्ति एवं उसके माहात्म्यका वर्णन	२२१
१४.	सोमनाथ ज्योतिर्लिंगकी उत्पत्तिका वृत्तान्त	१८६	३१.	रामेश्वर नामक ज्योतिर्लिंगके प्रादुर्भाव एवं माहात्म्यका वर्णन	२२३
१५.	मल्लिकार्जुन ज्योतिर्लिंगकी उत्पत्ति-कथा	१८८			
१६.	महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंगके प्राकट्यका वर्णन ...	१८९			
१७.	महाकाल ज्योतिर्लिंगके माहात्म्य-वर्णनके क्रममें राजा चन्द्रसेन तथा श्रीकर गोपका वृत्तान्त	१९२			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३२.	घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंगके माहात्म्यमें सुदेहा ब्राह्मणी एवं सुधर्मा ब्राह्मणका चरित-वर्णन.....	२२५	वैशिष्ट्य		२४९
३३.	घुश्मेश्वर ज्योतिर्लिंग एवं शिवालयेके नामकरणका आख्यान	२२७	३९.	शिवरात्रिब्रतकी उद्घापन-विधिका वर्णन	२५३
३४.	हरीश्वरलिंगका माहात्म्य और भगवान् विष्णुके सुदर्शनचक्र प्राप्त करनेकी कथा	२३०	४०.	शिवरात्रिब्रतमाहात्म्यके प्रसंगमें व्याध एवं मृगपरिवारकी कथा तथा व्याधेश्वरलिंगका माहात्म्य	२५४
३५.	विष्णुप्रोक्त शिवसहस्रनामस्तोत्र	२३१	४१.	ब्रह्म एवं मोक्षका निरूपण	२५८
३६.	शिवसहस्रनामस्तोत्रकी फल-श्रुति	२४५	४२.	भगवान् शिवके सगुण और निर्गुण स्वरूपका वर्णन	२६०
३७.	शिवकी पूजा करनेवाले विविध देवताओं, ऋषियों एवं राजाओंका वर्णन	२४७	४३.	ज्ञानका निरूपण तथा शिवपुराणकी कोटिरुद्रसंहिताके श्रवणादिका माहात्म्य	२६१
३८.	भगवान् शिवके विविध ब्रतोंमें शिवरात्रिब्रतका		महादेव-महिमा		२६४

उमासंहिता

१. पुत्रप्राप्तिके लिये कैलासपर गये हुए श्रीकृष्णका उपमन्युसे संवाद.....	२६५	आदि लोकोंका वर्णन	३०३
२. श्रीकृष्णके प्रति उपमन्युका शिवभक्तिका उपदेश...	२६८	२०. तपस्यासे शिवलोककी प्राप्ति, सात्त्विक आदि तपस्याके भेद, मानवजन्मकी प्रशस्तिका कथन....	३०५
३. श्रीकृष्णकी तपस्या तथा शिव-पार्वतीसे वरदानकी प्राप्ति, अन्य शिवभक्तोंका वर्णन	२७०	२१. कर्मानुसार जन्मका वर्णनकर क्षत्रियके लिये संग्रामके फलका निरूपण.....	३०७
४. शिवकी मायाका प्रभाव	२७३	२२. देहकी उत्पत्तिका वर्णन.....	३०९
५. महापातकोंका वर्णन.....	२७५	२३. शरीरकी अपवित्रता तथा उसके बालादि अवस्थाओंमें प्राप्त होनेवाले दुःखोंका वर्णन.....	३११
६. पापभेदनिरूपण	२७७	२४. नारदके प्रति पंचचूडा अप्सराके द्वारा स्त्रीके स्वभावका वर्णन	३१४
७. यमलोकका मार्ग एवं यमदूतोंके स्वरूपका वर्णन	२७९	२५. मृत्युकाल निकट आनेके लक्षण.....	३१५
८. नरक-भेद-निरूपण	२८२	२६. योगियोंद्वारा कालकी गतिको टालनेका वर्णन ...	३१९
९. नरककी यातनाओंका वर्णन	२८३	२७. अमरत्व प्राप्त करनेकी चार यौगिक साधनाएँ.....	३२१
१०. नरकविशेषमें दुःखवर्णन	२८५	२८. छायापुरुषके दर्शनका वर्णन	३२३
११. दानके प्रभावसे यमपुरके दुःखका अभाव तथा अन्नदानका विशेष माहात्म्यवर्णन.....	२८७	२९. ब्रह्माकी आदिसृष्टिका वर्णन.....	३२५
१२. जलदान, सत्यभाषण और तपकी महिमा.....	२९०	३०. ब्रह्माद्वारा स्वायम्भुव मनु आदिकी सृष्टिका वर्णन	३२६
१३. पुराणमाहात्म्यनिरूपण	२९२	३१. दैत्य, गन्धर्व, सर्प एवं राक्षसोंकी सृष्टिका वर्णन तथा दक्षद्वारा नारदके शाप-वृत्तान्तका कथन....	३२८
१४. दानमाहात्म्य तथा दानके भेदका वर्णन.....	२९४	३२. कश्यपकी पत्नियोंकी सन्तानोंके नामका वर्णन.....	३३०
१५. ब्रह्माण्डदानकी महिमाके प्रसंगमें पाताललोकका निरूपण	२९५	३३. मरुतोंकी उत्पत्ति, भूतसर्गका कथन तथा उनके राजाओंका निर्धारण.....	३३१
१६. विभिन्न पापकर्मोंसे प्राप्त होनेवाले नरकोंका वर्णन और शिव-नाम-स्मरणकी महिमा	२९७	३४. चतुर्दश मन्वन्तरोंका वर्णन	३३३
१७. ब्रह्माण्डके वर्णन-प्रसंगमें जम्बूद्वीपका निरूपण.	२९८	३५. विवस्वान् एवं संज्ञाका वृत्तान्तवर्णनपूर्वक अश्विनीकुमारोंकी उत्पत्तिका वर्णन.....	३३५
१८. भारतवर्ष तथा प्लक्ष आदि छः द्वीपोंका वर्णन.....	३००		
१९. सूर्यादि ग्रहोंकी स्थितिका निरूपण करके जन			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३६.	वैवस्वतमनुके नौ पुत्रोंके वंशका वर्णन	३३७	४५.	भगवती जगदम्बाके चरितवर्णनक्रममें सुरथराज एवं समाधि वैश्यका वृत्तान्त तथा मधु-कैटभके वधका वर्णन	३५८
३७.	इक्ष्वाकु आदि मनुवंशीय राजाओंका वर्णन.....	३४०	४६.	महिषासुरके अत्याचारसे पीड़ित ब्रह्मादि देवोंकी प्रार्थनासे प्रादुर्भूत महालक्ष्मीद्वारा महिषासुरका वध	३६२
३८.	सत्यव्रत-त्रिशंकु-सगर आदिके जन्मके निरूपण-पूर्वक उनके चरित्रका वर्णन	३४२	४७.	शुम्भ-निशुम्भसे पीड़ित देवताओंद्वारा देवीकी स्तुति तथा देवीद्वारा धूम्रलोचन, चण्ड-मुण्ड आदि असुरोंका वध	३६४
३९.	सगरकी दोनों पत्नियोंके वंशविस्तारवर्णन-पूर्वक वैवस्वतवंशमें उत्पन्न राजाओंका वर्णन	३४४	४८.	सरस्वतीदेवीके द्वारा सेनासहित शुम्भ-निशुम्भका वध	३६७
४०.	पितृश्राद्धका प्रभाव-वर्णन	३४६	४९.	भगवती उमाके प्रादुर्भावका वर्णन	३७०
४१.	पितरोंकी महिमाके वर्णनक्रममें सप्त व्याधोंके आख्यानका प्रारम्भ	३४८	५०.	दस महाविद्याओंकी उत्पत्ति तथा देवीके दुर्गा, शताक्षी, शाकम्भरी और भ्रामरी आदि नामोंके पड़नेका कारण	३७२
४२.	'सप्त व्याध' सम्बन्धी श्लोक सुनकर राजा ब्रह्मदत्त और उनके मन्त्रियोंको पूर्वजन्मका स्मरण होना और योगका आश्रय लेकर उनका मुक्त होना	३५१	५१.	भगवतीके मन्दिरनिर्माण, प्रतिमास्थापन तथा पूजनका माहात्म्य और उमासंहिताके श्रवण एवं पाठकी महिमा	३७५
४३.	आचार्यपूजन एवं पुराणश्रवणके अनन्तर कर्तव्य-कथन	३५२			
४४.	व्यासजीकी उत्पत्तिकी कथा, उनके द्वारा तीर्थाटनके प्रसंगमें काशीमें व्यासेश्वरलिंगकी स्थापना तथा मध्यमेश्वरके अनुग्रहसे पुराणनिर्माण	३५३			

कैलाससंहिता

१.	व्यासजीसे शौनकादि ऋषियोंका संवाद	३७९	१५.	तिरोभावाद चक्रों तथा उनके अधिदेवताओं आदिका वर्णन	४११
२.	भगवान् शिवसे पार्वतीजीकी प्रणवविषयक जिज्ञासा	३८१	१६.	शैवदर्शनके अनुसार शिवतत्त्व, जगत्-प्रपञ्च और जीवतत्त्वके विषयमें विशद विवेचन तथा शिवसे जीव और जगत्की अभिन्नताका प्रतिपादन	४१३
३.	प्रणवमीमांसा तथा संन्यासविधिवर्णन	३८२	१७.	अद्वैत शैववाद एवं सृष्टिप्रक्रियाका प्रतिपादन ...	४१७
४.	संन्यासदीक्षासे पूर्वकी आह्निकविधि	३८५	१८.	संन्यासपद्धतिमें शिष्य बनानेकी विधि	४१९
५.	संन्यासदीक्षाहेतु मण्डलनिर्माणकी विधि	३८६	१९.	महावाक्योंके तात्पर्य तथा योगपट्टविधिका वर्णन	४२१
६.	पूजाके अंगभूत न्यासादि कर्म	३८७	२०.	यतियोंके क्षौर-स्नानादिकी विधि तथा अन्य आचारोंका वर्णन	४२५
७.	शिवजीके विविध ध्यानों तथा पूजा-विधिका वर्णन	३९०	२१.	यतिके अन्त्येष्टिकर्मकी दशाहपर्यन्त विधिका वर्णन	४२६
८.	आवरणपूजा-विधि-वर्णन	३९३	२२.	यतिके लिये एकादशाह-कृत्यका वर्णन	४३०
९.	प्रणवोपासनाकी विधि	३९५	२३.	यतिके द्वादशाह-कृत्यका वर्णन, स्कन्द और वामदेवका कैलासपर्वतपर जाना तथा सूतजीके द्वारा इस संहिताका उपसंहार	४३२
१०.	सूतजीका काशीमें आगमन	३९७			
११.	भगवान् कार्तिकेयसे वामदेवमुनिकी प्रणव-जिज्ञासा	३९९			
१२.	प्रणवरूप शिवतत्त्वका वर्णन तथा संन्यासांगभूत नान्दीश्राद्ध-विधि	४०१			
१३.	संन्यासकी विधि	४०५			
१४.	शिवस्वरूप प्रणवका वर्णन	४०९			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
वायवीयसंहिता—पूर्वखण्ड					
१.	ऋषियोंद्वारा सम्मानित सूतजीके द्वारा कथाका आरम्भ, विद्यास्थानों एवं पुराणोंका परिचय तथा वायुसंहिताका प्रारम्भ	४३५	१८.	दक्षके शिवसे द्वेषका कारण	४६८
२.	ऋषियोंका ब्रह्माजीके पास जाकर उनकी स्तुति करके उनसे परमपुरुषके विषयमें प्रश्न करना और ब्रह्माजीका आनन्दमग्न हो 'रुद्र' कहकर उत्तर देना	४३८	१९.	दक्षयज्ञका उपक्रम, दधीचिका दक्षको शाप देना, वीरभद्र और भद्रकालीका प्रादुर्भाव तथा उनका यज्ञध्वंसके लिये प्रस्थान	४७१
३.	ब्रह्माजीके द्वारा परमतत्त्वके रूपमें भगवान् शिवकी महत्ताका प्रतिपादन तथा उनकी आज्ञासे सब मुनियोंका नैमिषारण्यमें आना	४३९	२०.	गणोंके साथ वीरभद्रका दक्षकी यज्ञभूमिमें आगमन तथा उनके द्वारा दक्षके यज्ञका विध्वंस	४७३
४.	नैमिषारण्यमें दीर्घसत्रके अन्तमें मुनियोंके पास वायुदेवताका आगमन	४४२	२१.	वीरभद्रका दक्षके यज्ञमें आये देवताओंको दण्ड देना तथा दक्षका सिर काटना	४७५
५.	ऋषियोंके पूछनेपर वायुदेवद्वारा पशु, पाश एवं पशुपतिका तात्त्विक विवेचन	४४४	२२.	वीरभद्रके पराक्रमका वर्णन	४७७
६.	महेश्वरकी महत्ताका प्रतिपादन	४४६	२३.	पराजित देवोंके द्वारा की गयी स्तुतिसे प्रसन्न शिवका यज्ञकी सम्पूर्ति करना तथा देवताओंको सान्त्वना देकर अन्तर्धान होना	४७९
७.	कालकी महिमाका वर्णन	४५०	२४.	शिवका तपस्याके लिये मन्दराचलपर गमन, मन्दराचलका वर्णन, शुम्भ-निशुम्भ दैत्यकी उत्पत्ति, ब्रह्माकी प्रार्थनासे उनके वधके लिये शिव और शिवाके विचित्र लीला-प्रपञ्चका वर्णन	४८२
८.	कालका परिमाण एवं त्रिदेवोंके आयुमानका वर्णन	४५१	२५.	पार्वतीकी तपस्या, व्याघ्रपर उनकी कृपा, ब्रह्माजीका देवीके साथ वार्तालाप, देवीके द्वारा काली त्वचाका त्याग और उससे उत्पन्न कौशिकीके द्वारा शुम्भ-निशुम्भका वध	४८४
९.	सृष्टिके पालन एवं प्रलयकर्तृत्वका वर्णन	४५२	२६.	ब्रह्माजीद्वारा दुष्कर्म बतानेपर भी गौरीदेवीका शरणागत व्याघ्रको त्यागनेसे इनकार करना और माता-पितासे मिलकर मन्दराचलको जाना	४८६
१०.	ब्रह्माण्डकी स्थिति, स्वरूप आदिका वर्णन	४५४	२७.	मन्दराचलपर गौरीदेवीका स्वागत, महादेवजीके द्वारा उनके और अपने उत्कृष्ट स्वरूप एवं अविच्छेद्य सम्बन्धका प्रकाशन तथा देवीके साथ आये हुए व्याघ्रको उनका गणाध्यक्ष बनाकर अन्तःपुरके द्वारपर सोमनन्दी नामसे प्रतिष्ठित करना	४८८
११.	अवान्तर सर्ग और प्रतिसर्गका वर्णन	४५६	२८.	अग्नि और सोमके स्वरूपका विवेचन तथा जगत्की अग्नीषोमात्मकताका प्रतिपादन	४८९
१२.	ब्रह्माजीकी मानसी सृष्टि, ब्रह्माजीकी मूर्च्छा, उनके मुखसे रुद्रदेवका प्राकट्य, सप्राण हुए ब्रह्माजीके द्वारा आठ नामोंसे महेश्वरकी स्तुति तथा रुद्रकी आज्ञासे ब्रह्माद्वारा सृष्टि-रचना	४५७	२९.	जगत् 'वाणी और अर्थरूप' है—इसका प्रतिपादन	४९०
१३.	कल्पभेदसे त्रिदेवों (ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र)-के एक-दूसरेसे प्रादुर्भावका वर्णन	४६०	३०.	ऋषियोंका शिवतत्त्वविषयक प्रश्न	४९२
१४.	प्रत्येक कल्पमें ब्रह्मासे रुद्रकी उत्पत्तिका वर्णन ...	४६२			
१५.	अर्धनारीश्वररूपमें प्रकट शिवकी ब्रह्माजीद्वारा स्तुति	४६३			
१६.	महादेवजीके शरीरसे देवीका प्राकट्य और देवीके भूमध्यभागसे शक्तिका प्रादुर्भाव	४६५			
१७.	ब्रह्माके आधे शरीरसे शतरूपाकी उत्पत्ति तथा दक्ष आदि प्रजापतियोंकी उत्पत्तिका वर्णन	४६६			

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
३१.	शिवजीकी सर्वेश्वरता, सर्वनियामकता तथा मोक्ष-प्रदताका निरूपण	४९५		आज्ञासे शिवोपासनामें संलग्न होना	५०६
३२.	परम धर्मका प्रतिपादन, शैवागमके अनुसार पाशुपत ज्ञान तथा उसके साधनोंका वर्णन	५००	३५.	भगवान् शंकरका इन्द्ररूप धारण करके उपमन्युके भक्तिभावकी परीक्षा लेना, उन्हें क्षीरसागर आदि देकर बहुत-से वर देना और अपना पुत्र मानकर पार्वतीके हाथमें सौंपना, कृतार्थ हुए उपमन्युका अपनी माताके स्थानपर लौटना	५०९
३३.	पाशुपत-व्रतकी विधि और महिमा तथा भस्मधारणकी महता	५०२			
३४.	उपमन्युका गोदुग्धके लिये हठ तथा माताकी				

वायवीयसंहिता—उत्तरखण्ड

१.	ऋषियोंके पूछनेपर वायुदेवका श्रीकृष्ण और उपमन्युके मिलनका प्रसंग सुनाना, श्रीकृष्णको उपमन्युसे ज्ञानका और भगवान् शंकरसे पुत्रका लाभ	५१३	चिन्तन एवं ज्ञानकी महत्ताका प्रतिपादन	५३३
२.	उपमन्युद्वारा श्रीकृष्णको पाशुपत ज्ञानका उपदेश ..	५१४	१२. पंचाक्षर-मन्त्रके माहात्म्यका वर्णन	५३६
३.	भगवान् शिवकी ब्रह्मा आदि पंचमूर्तियों, ईशानादि ब्रह्ममूर्तियों तथा पृथ्वी एवं शर्व आदि अष्टमूर्तियोंका परिचय और उनकी सर्वव्यापकताका वर्णन	५१७	१३. पंचाक्षर-मन्त्रकी महिमा, उसमें समस्त वाङ्मयकी स्थिति, उसकी उपदेशपरम्परा, देवीरूपा पंचाक्षरी-विद्याका ध्यान, उसके समस्त और व्यस्त अक्षरोंके ऋषि, छन्द, देवता, बीज, शक्ति तथा अंगन्यास आदिका विचार	५३८
४.	शिव और शिवाकी विभूतियोंका वर्णन	५१८	१४. गुरुसे मन्त्र लेने तथा उसके जप करनेकी विधि, पाँच प्रकारके जप तथा उनकी महिमा, मन्त्रगणनाके लिये विभिन्न प्रकारकी मालाओंका महत्त्व तथा अंगुलियोंके उपयोगका वर्णन, जपके लिये उपयोगी स्थान तथा दिशा, जपमें वर्जनीय बातें, सदाचारका महत्त्व, आस्तिकताकी प्रशंसा तथा पंचाक्षर-मन्त्रकी विशेषताका वर्णन	५४१
५.	परमेश्वर शिवके यथार्थ स्वरूपका विवेचन तथा उनकी शरणमें जानेसे जीवके कल्याणका कथन ..	५२२	१५. त्रिविध दीक्षाका निरूपण, शक्तिपातकी आवश्यकता तथा उसके लक्षणोंका वर्णन, गुरुका महत्त्व, ज्ञानी गुरुसे ही मोक्षकी प्राप्ति तथा गुरुके द्वारा शिष्यकी परीक्षा	५४४
६.	शिवके शुद्ध, बुद्ध, मुक्त, सर्वमय, सर्वव्यापक एवं सर्वातीत स्वरूपका तथा उनकी प्रणवरूपताका प्रतिपादन	५२४	१६. समय-संस्कार या समयाचारकी दीक्षाकी विधि ...	५४८
७.	परमेश्वरकी शक्तिका ऋषियोंद्वारा साक्षात्कार, शिवके प्रसादसे प्राणियोंकी मुक्ति, शिवकी सेवा-भक्ति तथा पाँच प्रकारके शिवधर्मका वर्णन	५२५	१७. षडध्वशोधनका निरूपण	५५१
८.	शिव-ज्ञान, शिवकी उपासनासे देवताओंको उनका दर्शन, सूर्यदेवमें शिवकी पूजा करके अर्घ्यदानकी विधि तथा व्यासावतारोंका वर्णन	५२७	१८. षडध्वशोधनकी विधि	५५३
९.	शिवके अवतार योगाचार्यों तथा उनके शिष्योंकी नामावली	५२९	१९. साधक-संस्कार और मन्त्र-माहात्म्यका वर्णन ...	५५६
१०.	भगवान् शिवके प्रति ब्रह्मा-भक्तिकी आवश्यकताका प्रतिपादन, शिवधर्मके चार पादोंका वर्णन एवं ज्ञानयोगके साधनों तथा शिवधर्मके अधिकारियोंका निरूपण, शिवपूजनके अनेक प्रकार एवं अनन्य-चित्तसे भजनकी महिमा	५३०	२०. योग्य शिष्यके आचार्यपदपर अभिषेकका वर्णन तथा संस्कारके विविध प्रकारोंका निर्देश	५५७
११.	वर्णाश्रम-धर्म तथा नारी-धर्मका वर्णन; शिवके भजन,		२१. शिवशास्त्रोक्त नित्य-नैमित्तिक कर्मका वर्णन	५५९
			२२. शिवशास्त्रोक्त न्यास आदि कर्मोंका वर्णन	५६१
			२३. अन्तर्याग अथवा मानसिक पूजाविधिका वर्णन	५६३
			२४. शिवपूजनकी विधि	५६४

अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या	अध्याय	विषय	पृष्ठ-संख्या
२५.	शिवपूजाकी विशेष विधि तथा शिव-भक्तिकी महिमा	५६७	३६.	शिवलिंग एवं शिवमूर्तिकी प्रतिष्ठाविधिका वर्णन...	६०७
२६.	साङ्गोपाङ्गपूजाविधानका वर्णन	५७०	३७.	योगके अनेक भेद, उसके आठ और छः अंगोंका विवेचन—यम, नियम, आसन, प्राणायाम, दशविध प्राणोंको जीतनेकी महिमा, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधिका निरूपण	६१०
२७.	शिवपूजनमें अग्निकर्मका वर्णन	५७२	३८.	योगमार्गके विघ्न, सिद्धि-सूचक उपसर्ग तथा पृथ्वीसे लेकर बुद्धितत्त्वपर्यन्त ऐश्वर्यगुणोंका वर्णन, शिव-शिवके ध्यानकी महिमा	६१३
२८.	शिवाश्रमसेवियोंके लिये नित्य-नैमित्तिक कर्मकी विधिका वर्णन	५७६	३९.	ध्यान और उसकी महिमा, योगधर्म तथा शिवयोगीका महत्त्व, शिवभक्त या शिवके लिये प्राण देने अथवा शिवक्षेत्रमें मरणसे तत्काल मोक्ष-लाभका कथन	६१७
२९.	काम्यकर्मका वर्णन	५७७	४०.	वायुदेवका अन्तर्धान होना, ऋषियोंका सरस्वतीमें अवभृथ-स्नान और काशीमें दिव्य तेजका दर्शन करके ब्रह्माजीके पास जाना, ब्रह्माजीका उन्हें सिद्धिप्राप्तिकी सूचना देकर मेरुके कुमारशिखरपर भेजना	६१९
३०.	आवरणपूजाकी विस्तृत विधि तथा उक्त विधिसे पूजनकी महिमाका वर्णन	५७९	४१.	मेरुगिरिके स्कन्द-सरोवरके तटपर मुनियोंका सनत्कुमारजीसे मिलना, भगवान् नन्दीका वहाँ आना और दृष्टिपातमात्रसे पाशछेदन एवं ज्ञानयोगका उपदेश करके चला जाना, शिवपुराणकी महिमा तथा ग्रन्थका उपसंहार	६२२
३१.	शिवके पाँच आवरणोंमें स्थित सभी देवताओंकी स्तुति तथा उनसे अभीष्टपूर्ति एवं मंगलकी कामना	५८४	४२.	नम्र निवेदन एवं क्षमा-प्रार्थना	६२५
३२.	ऐहिक फल देनेवाले कर्मों और उनकी विधिका वर्णन, शिव-पूजनकी विधि, शान्ति-पुष्टि आदि विविध काम्य कर्मोंमें विभिन्न हवनीय पदार्थोंके उपयोगका विधान	५९७			
३३.	पारलौकिक फल देनेवाले कर्म—शिवलिंग-महाव्रतकी विधि और महिमाका वर्णन	६०१			
३४.	मोहवश ब्रह्मा तथा विष्णुके द्वारा लिंगके आदि और अन्तको जाननेके लिये किये गये प्रयत्नका वर्णन	६०१			
३५.	लिंगमें शिवका प्राकट्य तथा उनके द्वारा ब्रह्मा-विष्णुको दिये गये ज्ञानोपदेशका वर्णन	६०३			

चित्र-सूची (रंगीन चित्र)

विषय	पृष्ठ-संख्या	विषय	पृष्ठ-संख्या
१- कैलासपति भगवान् शिव	आवरण-पृष्ठ प्रथम	७- द्वादश ज्योतिर्लिंग—२ (श्रीओंकारेश्वर, श्रीकेदारनाथ, श्रीभीमशंकर)	७
२- नित्य अभिन उमा-महेश्वर	” ” द्वितीय	८- द्वादश ज्योतिर्लिंग—३ (श्रीविश्वेश्वर, श्रीत्र्यम्बकेश्वर, श्रीवैद्यनाथ)	८
३- ॐ नमः शिवाय	३	९- द्वादश ज्योतिर्लिंग—४ (श्रीनागेश्वर, श्रीरामेश्वर, श्रीधुमेश्वर)	९
४- भगवान् सदाशिवद्वारा विष्णुजीको चक्र प्रदान	४	१०- देवताओंद्वारा श्रीदुर्गाजीकी स्तुति	१०
५- भगवती शाकम्भरी देवी	५		
६- द्वादश ज्योतिर्लिंग—१ (श्रीसोमनाथ, श्रीमल्लिकार्जुन, श्रीमहाकालेश्वर) ..	६		